

प्रेमचंद की कहानी 'सदगति' में सामाजिक यथार्थ

डॉ.वीरेंद्र सिंह बर्तवाल

(असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी,

राष्ट्रीय संस्कृति संस्थान,

श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग,

पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड)

कहानी हिन्दी गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है | इसमें जीवन के एक भाव अथवा अंग को केंद्र में रखकर रोचक शब्दों का ताना-बना बुना जाता है | कहानी में मनोरंजन, प्रेरणा और संदेश होता है | कहानी जीवन के यथार्थ पर आधारित होती है | इसमें कल्पना और रोचकता होती है | कल्पना ऐसी, जो सत्य प्रतीत होती है |

कथानक, चरित्र-चित्रण, देशकाल वातावरण, कथोपकथन, भाषा शैली एवं उद्देश्य जैसे तत्वों से निर्मित कहानी में कोतूहल, मनोरंजन, शिल्पगत उद्दात्तता, सुसंबद्धता, संक्षिप्तता, आकर्षक भाषा-शैली, नाटकीयता, प्रभावपूर्ण वर्णन, कल्पनाशीलता इत्यादि गुणों का होना उसे सफलता के शिखर पर ले जाते हैं |

कहानी मौखिक या लिखित, कल्पित या वास्तविक तथा गद्य या पद्य में लिखी हुई भाव प्रधान या विषय प्रधान घटना है, जिसका मुख्य उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना, उन्हें शिक्षा देना या किसी वस्तुस्थिति से परिचित कराना है |¹

हमारे देश में प्राचीन काल से ही कथा साहित्य की समृद्ध परम्परा रही है | यह परम्परा उपनिषदों की रूपक कथाओं, महाभारत के उपाख्यानों, बौद्ध साहित्य की जातक कथाओं और इनके बाद वृहत कथा मंजरी, कादम्बरी, दशकुमारचरित, पंचतंत्र आदि ग्रंथों में संचित कथा-साहित्य में देखी जा सकती है | लेकिन

आज हम जिस साहित्यिक विधा को कहानी के नाम से जानते हैं, वह वास्तव में आधुनिक युग की देन है |²

हिंदी कहानी की आयु लगभग 120 वर्ष है | हिंदी गद्य साहित्य में इसका आविर्भाव 20वीं शताब्दी के आरंभ में माना जाता है कि यह विधा आधुनिक हिंदी साहित्य में पाश्चात्य साहित्य से आयी है | कुछ लोग बंग महिला की 'दुलाईवाली' को तथा कुछ विद्वान माधवराय सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिन्दी की प्रथम मौलिक आधुनिक कहानी स्वीकारते हैं |

हिंदी में आधुनिक कहानी-लेखन का आरंभ बीसवीं शताब्दी के पहले दशक से माना जाता है | यद्यपि आरंभिक समय में कहानियों के अनुवाद ही किए गए लेकिन धीरे-धीरे मौलिक कहानियां लिखी जाने लगीं | किशोरीलाल गोस्वामी की 'गुलबहार', मास्टर भगवानदास की 'प्लेग की चुड़ैल', रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', गिरिजा दत्त वाजपेयी की 'पंडित और पंडितानी इत्यादि आधुनिक कहानी के निकट हैं, किंतु इसमें से कुछ विदेशी शैली की हैं, कुछ जीवन, स्केच, इतिहास, तथा निबंध के निकट हैं | कहानी शिल्प का वास्तविक सौंदर्य इनमें नहीं है | बंग महिला की 'दुलाईवाली' सरस्वती में 1907 में प्रकाशित हुई, जो हिंदी की प्रथम मौलिक आधुनिक कहानी है और दूसरी 'इंदु' में 1911 प्रकाशित जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' है |³

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इंदुमती को ही हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी माना है जिसका प्रकाशन सन 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था, किंतु शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपीयर के 'टम्पेस्ट' का अनुवाद है, अतः यह मौलिक रचना नहीं कही जा सकती | सरस्वती पत्रिका में ही सन 1903 में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई तथा सन 1901 में 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी का प्रकाशन 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक पत्रिका में हुआ, जिसके लेखक

माधवराय सप्रे थे,अतः यही हिंदी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी कही जा सकती है |⁴

हिंदी कहानी के विकास को चार भागों में बांटा जा सकता है -

1. प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी- सन 1900 से 1915 ई.
2. प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी -सन 1916 से 1936 ई.
3. प्रेमचन्दोत्तर हिंदी कहानी-सन 1936 से 1950 ई.
4. नई कहानी-सन 1950 के बाद |

हिंदी कहानी के लोक में मुंशी प्रेमचंद का नाम सर्वोपरि माना जाता है। वे हिंदी कहानी लेखन को उच्च शिखर तक ले गए | इससे कहानी के प्रति पाठकों का झुकाव हुआ | प्रेमचंद ने अपने जीवन में लगभग तीन सौ कहानियों की रचना की | उनकी अधिसंख्य कहानियों का विषय गावों पर केंद्रित है | उनकी रचनाओं में निर्धनता, जातिवाद, प्रताड़ना, शोषण, वर्गभेद जैसी सामाजिक विडम्बनाएं मुह बाये खड़ी दिखायी देती हैं |

उनके कहानी-लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि स्वयं उनकी ही कहानियों में हिंदी- कहानी के विकास की प्रायः सभी अवस्थाएं दृष्टिगोचर हो जाती हैं | उनकी आरंभिक कहानियों में किस्सागोई, आदर्शवाद और सोददेश्यता की मात्रा अधिक है | यद्यपि व्यवहारिक मनोविज्ञान का पुट दे कर मानवचरित्र के सूक्ष्म उदघाटन की क्षमता के फलस्वरूप प्रेमचंद ने अपनी कहानियों को विशिष्ट बना दिया है, पर उनकी आरंभिक कहानियों का कच्चापन और यथार्थ की उनकी कमजोर पकड़ अत्यंत स्पष्ट है |⁵

31 जुलाई,1880 को काशी के निकट लमही में माता आनंदी देवी और पिता अजायब राय के घर जन्मे प्रेमचंद ने हिंदी के साथ उर्दू में भी लेखन किया | उनका वास्तविक नाम धनपत

राय था | उर्दू में वे नवाब राय बनारसी नाम से लिखते थे | जब उनके 'सोजे वतन' प्रथम कहानी संग्रह को अंग्रेज़ी सरकार ने जब्त और प्रतिबंधित कर दिया तो उन्होंने 'प्रेमचंद' नाम से लेखन आरंभ कर दिया |

हिंदी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास का काल-विभाजन प्रेमचंद को ही केंद्र में रखकर किया जाता है | (प्रेमचंद-पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग)| यह प्रेमचंद के निर्विवाद महत्व का एक स्पष्ट प्रमाण है | वस्तुतः प्रेमचंद ही पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रूमनियत के धुंधलके से निकलकर यथार्थ की ठोस जमीन पर प्रतिष्ठित किया |⁶

मुंशी प्रेमचंद की पहली कहानी पंच परमेश्वर सन 1916 में और अंतिम कहानी कफन सन 1936 ई. में प्रकाशित हुई | अतः इस काल को प्रेमचंद युग कहना समीचीन प्रतीत होता है |⁷

पूस की रात, सवा सेर गेहूं, ठाकुर का कुआं, बूढ़ी काकी, माता का हृदय, हार की जीत, आत्माराम, ईदगाह, नशा, बेटों वाली विधवा, प्रेरणा, सदगति, नमक का दरोगा, लॉटरी, बड़े भाई साहब, शतरंज के खिलाड़ी, सुजान भगत, कजाकी इत्यादि कहानियों के रचनाकार प्रेमचंद कहानी लेखन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ शिल्पी बनकर उभरे हैं |

उनकी सदगति कहानी में व्याप्त जातिवादी परंपरा का प्रबल प्रतिकार करते हुए कर्तव्यबोध की प्रेरणा देती है | यह कहानी छुआछूत की सड़ी-गली रूढ़ि पर प्रहार करते हुए मानवता के शत्रुओं को आत्मावलोकन करने को विवश करती है |

कहानी का पात्र पं.घासीराम जाति का ब्रह्मण है, पूजा-पाठ और पुरोहिताई करता है परंतु इसके बावजूद उसमें निम्न जाति के लोगों के प्रति कोई करुणा और औदार्य नहीं है | उसके दिमाग

में वर्गभेद और उच्च जातीय दंभ कूट-कूट कर भरा है | उनकी पत्नी भी इस मामले में घासीराम से दो हाथ आगे है | कहानी का मुख्य पात्र दुखिया चमार जातिवादी और छुआछूत की ढोंगी व्यवस्था का शिकार है, परंतु वह इसे अपनी नियति और भाग्य समझता है, न कि उच्च वर्ग द्वारा किया जा रहा अत्याचार |

दुखिया अपनी बेटी की सगाई की साइत-सगुन देखने घासीराम के पास गया | घासीराम ने दुखिया को भूसा उठाने और लकड़ी फाड़ने का काम सौंप दिया | बेचारा दिनभर भूखा-प्यासा उस घर में यह कार्य करता रहा, जिस घर के आंगन में उसका प्रवेश भी निषिद्ध था | उसने चिलम के लिए पंडिताइन से आग मांगी | पंडिताइन ने इस प्रकार दूर से आग फेंकी कि एक चिंगारी दुखिया के सर पर गिर गयी |

सादगी और निश्छलता से युक्त दुखिया इसे उच्च जाती द्वारा की जा रही प्रताड़ना, शोषण, छुआछूत और वर्गभेद नहीं मानता, अपितु वह मानता है कि यह उसके द्वारा ब्राह्मण के घर में प्रवेश का परिणाम है | भगवान ने उसे यह दंड दे दिया- "उसके मन ने कहा- यह एक पवित्र ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने का फल है | भगवान ने कितनी जल्दी फल दे दिया | इसी से तो संसार पंडितों से डरता है |" ⁸

श्रम और भूख से पीड़ित दुखिया लकड़ी फाड़ते-फाड़ते मौत के मुंह में चला गया, परंतु उसने उच्च जाति के प्रति अपने उस कर्तव्य और सम्मान का परित्याग नहीं किया, जो उसकी पीढीयां वर्षों से करती आ रही हैं | और इस श्रद्धा-भक्ति का फल उसे मृत्यु के बाद भी अपमान के रूप में मिला | उसके शव को घासीराम और उसकी पत्नी ने हाथ नहीं लगाया | उलटे वहां रो रही दुखिया की पत्नी, लड़की और मोहल्ले की महिलाओं को अपशब्द कह डाले | (चमरौने का कोई आदमी लाश उठा लाने

को तैयार न हुआ | हां, दुखी की स्त्री और कन्या दोनों हाय-हाय करती वहाँ से चलीं और पंडित जी के द्वार पर आकर सर पीट-पीटकर रोने लगी | उसके साथ दस पांच और चमारिनें थीं |... आधी रात तक रोना पीटना जारी रहा | देवताओं का सोना मुश्किल हो गया | पर लाश उठाने कोई चमार नहीं आया और ब्राह्मण चमार की लाश कैसे उठाते | भला ऐसा किसी शास्त्र-पुराण में लिखा है ?⁹

जब लाश सड़ने लगी तो घासीदास ने दूर से उस पर रस्सी का फंदा डालकर किनारे तक घसीट डाला और अपवित्र होने के कारण स्नान के पूजा की | (उधर दुखी की लाश को खेत में गीदड़ और गिद्ध, कुत्ते और कौए नोंच रहे थे | यही जीवन-पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निष्ठा पुरस्कार था |)¹⁰

इस कहानी में जातीय विष मानवता का बड़ा शत्रु प्रदर्शित किया गया है | झूठी शान के सामने करुणा और धर्म बौने बन गए हैं | जातीय दंभ और ऐंठन ने एक ऐसे निरीह प्राणी के प्राण हरण कर लिये, जो अपने कर्तव्य मार्ग से विचलित नहीं हुआ | थोथी परंपराओं का पालन करते-करते दुखिया इस संसार से चला गया | उसकी मौत हमारे समाज के बीच बनी गहरी विभेदीकरण की खाई पर अनेक प्रश्न खड़े कर गयी |

‘सदगति’ भारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा पर चोट करती है, जो समाज में जाति और वर्ग वैषम्य के द्वारा विभेद पैदा करती है व मनुष्य को मानवीय नहीं रहने देती है | यह जातीय और वर्गीय दंश अंततः मनुष्य की जान लेने में भी नहीं हिचकता | प्रेमचंद यथार्थवादी कलाकार हैं | वह कहीं नहीं कहते कि भारतीय संस्कृति के इस चेहरे को बदलो, पर ‘सदगति’ के पाठकों को यह एक कहानी बेचैनी से भर देती और वह सामाजिक बदलाव के लिए सोचने को मजबूर हो जाता है |¹¹

प्रेमचंद ने इस कहानी में भारतीय समाज में व्याप्त उस कलंक को दिखाने का प्रयास किया है, जिसके कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच ऊंच-नीच, बड़े-छोटे का विभेद उत्पन्न किया गया है | यह हमारे समाज का वह दर्दीला पहलू है, जिसने मानवता को गर्त में धकेल दिया है | अनुसूचित जाति का व्यक्ति जहां असीम उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों के बोझ तले जीवनभर कसमसाता रहता है | पं. घासीराम दुखिया के घर आने वाले थे | दुखिया की पत्नी झुरिया उनके बैठने के लिए उच्च जाति के लोगों के यहां से खाट मंगवाना चाहती है | दुखिया इस पर आक्रोशित हो जाता है | उसे पता है कि ठकुराने वाले हम नीच जाति वालों को खाट नहीं देंगे | वह इसे समाज का सिद्धांत और परंपरा स्वीकार करते हुए व्यक्त करता है कि ठकुराने वाले हमें अपनी कोई वस्तु न दें, इसमें कोई अलग बात नहीं और वे हमारी वस्तुएं उठा ले जाएं तो भी कोई अलग बात नहीं |

(झुरिया- कहीं से खटिया न मिल जायगी ? ठकुराने से मांग लाना | दखी- तू तो कभी- कभी ऐसी बात कह देती है कि देह जल जाती है | ठकुराने वाले मुझे खटिया देंगे | आग तो घर से निकलती नहीं, खटिया देंगे | कैथाने में जाकर एक लोटा पानी मांगू तो न मिले | खटिया कौन देगा | हमारे उपले, सेंठे, भूसा, लकड़ी थोड़े ही हैं कि जो चाहे उठा ले जाय | ले अपनी खटोली धोकर रख दे | गरमी के तो दिन हैं उनके आते-आते सूख जायगी |)¹²

आम आदमी को अपनी कहानी का नायक बनाना और उसके व्यवहार और शब्दों से शोषक वर्ग के प्रति बहुत कुछ उगलवाना प्रेमचंद की कहानियों की विशेषता है | वे कहानी के पात्रों के माध्यम से सामंती व्यवस्था की हत्या करते प्रतीत होते हैं | सदगति जैसी उनकी कहानी पर प्रगतिशीलता की शक्ति दिखाई देती है | आडम्बर के विरोध का उनका तरीका भी अनोखा

है | दलितों का शोषण करने वाले और उससे भेदभाव करने वाले पं.घासीराम और उसकी पत्नी के चरित्र को प्रेमचंद ने विशेष कला के माध्यम से खूब उघाड़कर रखा है |

'ठाकुर का कुआं', 'सदगति' आदि कहानियों में तथा 'गोदान' एवं 'कर्मभूमि' उपन्यासों में दलितों के शोषण, उत्पीड़न, अपमान और विद्रोह की अभिव्यक्ति है | प्रेमचंद पहले ग्रामीण कथाकार व पहले दलितों के पक्षधर थे | उन्होंने दलितों के जीवन पर उस समय लिखा, जब हिंदी में दलित साहित्य का 'कान्सेप्ट' भी नहीं था |¹³

प्रेमचंद की कहानियां पाठक को झकझोर देती हैं | उनमें मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता मिली है | वे कहानियों में मानव मन के भावों को कुशलता से परोसकर पत्रों के माध्यम से उन्हीं के परिवेश की भाषा में उनके समाज का पूरा सच अभिव्यक्त कर देते हैं | 'सदगति' में दुखिया चमार, पं.घासीराम और उनकी पत्नी के माध्यम से उन्होंने दो जातियों के बीच आपसी संबंधों, अंधविश्वास, छुआछूत, अमानवीयता इत्यादि का सुंदर प्रतिबिंबन किया है |

सारांशतः कहा जा सकता है कि सदगति कहानी में कथाकार प्रेमचंद के उस उत्कृष्ट कथा-शिल्प के दर्शन होते हैं, जिस कला के कारण वे इस क्षेत्र में शिखर पुरुष बने हैं | आम आदमी को कथावस्तु के केंद्र में रखने वाले प्रेमचंद के शब्दों का जादुई चमत्कार इसमें स्पष्ट दिखाई देता है | वे इसमें मानवीय मूल्यों के उपासक, मानवता के पुजारी दिखलाई देते हैं | ग्राम्य जीवन का सात्कार कराने वाली इस कहानी के अध्ययन से प्रतीत होता है कि ग्रामीण समाज के प्रति इस कथाकार का कितना अगाध प्रेम था | धर्म नहीं, कर्म की उच्चता को वरीयता देने का संदेश देने वाली इस कहानी के माध्यम से कथाकार कहना चाहता है कि आचरण की उच्चता ही सामाजिक श्रेष्ठता का मानक है |

कहानीकार समाज में पुरानी थोथी परंपराओं को समूल नष्ट कर उनकी जगह पर मानवीय मूल्य स्थापित करने की पैरवी करता है | वैसे भी प्रेमचंद साहित्यिक क्षेत्र में इसलिए प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने समाज में व्याप्त अप्रिय और पीड़ादायक सच को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया है | उन्होंने निम्न, शोषित, दलित, निर्धन वर्ग पर हो रहे अन्याय और अत्याचार का खुलकर विरोध किया है | उन्होंने एक प्रकार से 'राम राज्य' वाले समाज की संकल्पना की है | उनके साहित्य में जनवाद, गांधीवाद और मार्क्सवाद झलकता है | डॉ. रजनीकांत एस. शाह के शब्दों में " प्रेमचंद जी मानव मन की संवेदनाएं तथा कुंठा के कुशल वक्ता रहे हैं | उनका कथासाहित्य मानव संस्कृति की आभ्यंतर अनुभूतियों को व्यथा के रूप में प्रभावक ढंग से निरूपित करता है | ये संवेदनाएं ही मानव के विराट स्वरूप का मानवीय रूप में मुल्यांकन पाती है |" ¹⁴

संदर्भ :

1. डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह, ज्ञान प्रभा (लेखन की साहित्यिक विधा: कहानी), पृ.-30
2. प्रो. भगवान देव पाण्डेय, डॉ नरेन्द्र प्रताप सिंह, भाषा, साहित्य और जनसंचार, पृ.-46
3. राष्ट्री भाग-2, पृ.-1, (भूमिका) राष्ट्रीय- संस्कृत-संस्थान, नई दिल्ली
4. डॉ.नरेन्द्र प्रताप सिंह, ज्ञान प्रभा (लेखन की साहित्यिक विधा : कहानी), पृ.-32-33
5. प्रो. भगवान देव पाण्डेय, डॉ नरेन्द्र प्रताप सिंह, भाषा, साहित्य और जनसंचार, पृ.-51
6. हिंदी साहित्य का इतिहास,संपादक- डॉ नरेन्द्र, डॉ.हरदयाल, पृ.-564

7. आरोह,भाग 1, पृ.-4, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,2006
8. डॉ.नरेन्द्र प्रताप सिंह, ज्ञान प्रभा (लेखन की साहित्यिक विधा: कहानी), पृ.-34
9. राष्ट्र भाग-2, पृ.-42, राष्ट्रिय- संस्कृति-संस्थान, नई दिल्ली
10. राष्ट्र भाग-2, पृ.-45, राष्ट्रिय- संस्कृति-संस्थान, नई दिल्ली
11. राष्ट्र भाग-2, पृ.-45 , राष्ट्रिय- संस्कृति-संस्थान, नई दिल्ली
12. राष्ट्र भाग-2, पृ.-39, राष्ट्रिय- संस्कृति-संस्थान, नई दिल्ली
13. राष्ट्र भाग-2, पृ.-40, राष्ट्रिय- संस्कृति-संस्थान, नई दिल्ली
14. डॉ. चंचल शर्मा (डोगरा)कश्फ (प्रेमचंद की प्रासंगिकता),अंक-1, जून.2017, पृ.-139
15. डॉ. रजनीकांत. एस,शाह, कश्फ (प्रेमचंद के कथासाहित्य में नारीविमर्श), अंक-1, जून,2017, पृ.-146

पता:

मकान नंबर-एच.301,नेहरु कॉलोनी

धर्मपुर, देहरादून, उत्तराखंड

पिन-248001

फोन-9411341443,7535975381

ई-मेल: veerendra.bartwal8@gmail.com